Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

रागांग – राग वर्गीकरण की विशिष्ट पद्धति

Rakesh Subhashbhai Dave[1], Dr. Rajesh Gopalrao Kelkar[2], Prof. Rakesh J. Mahisuri[3]

1 Asst. Professor, Department of Indian Classical Music Vocal, The M S University of Baroda, Gujarat
2 Dean, Faculty of Performing Arts, The Maharaja Sayajirao University of Baroda, Vadodara, Gujarat
3 Dept.of Indian Classical Music (Inst.), Faculty of Performing Arts, The M S University of Baroda, Gujarat

शोध सार

आवश्यकता आविष्कार की जननी है। भारतीय संगीत जगत में रागों की नवनिर्मिती के फलस्वरूप राग वर्गीकरण की कई नवीन पद्धतियाँ समयांतर के साथ हमेशा उभरती रही है। आधुनिक समय की परिपूर्ण 'रागांग–राग वर्गीकरण पद्धति' राग वर्गीकरण की कई प्रणालिओं में से एक है। मध्यकाल में प्रस्फुटित 'मेल–राग वर्गीकरण पद्धति' आधुनिक काल में थाट–राग वर्गीकरण के नाम से उत्तर भारत में प्रचलित हुई। थाट–राग वर्गीकरण के प्रवर्तक पंडित विष्णुनारायण भातखंडे जी ने उत्तर भारतीय संगीत को इस पद्धति द्वारा सुव्यवस्थित रूप प्रदान किया। किन्तु वर्तमान काल में उत्पन्न हुई कुछ समस्याओं ने राग वर्गीकरण की नई पद्धति की आवश्यकता को चुनौती के रूप में खड़ा कर दिया। इन आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु जो नवीन राग वर्गीकरण पद्धति का निर्माण हुआ वह है 'रागांग–राग वर्गीकरण पद्धति'। वर्तमान समय में इस पद्धति को सुव्यवस्थित कर प्रचार में लाने का श्रेय पंडित नारायण मोरेश्वर खरे को जाता है। उन्होंने थाट व्यवस्था की कुछ विसंगतियों को दूर करने हेतु रागों का विभाजन स्वर–साम्य के स्थान पर स्वरूप–साम्य का आधार लेकर नवीन राग वर्गीकरण प्रणाली को 'रागांग–राग वर्गीकरण पद्धति' यह नाम दिया।

बीज शब्दः भारतीय संगीत, राग वर्गीकरण, रागांग पद्धति।

भूमिका

भारतीय संगीत में 'रागांग' शब्द का प्रयोग राग–वर्गीकरण के संदर्भ में प्राचीन काल से ही किया गया है। आधुनिक काल के संदर्भ में अगर हम विचार करें तो राग की विशिष्ट स्वर संगतियाँ (अंग) तथा अंग–संचालन के आधार पर किया गया वर्गीकरण ही 'रागांग वर्गीकरण' के नाम से जाना जाता है।

रागांग' राग का वह विशिष्ट स्वर समूह है, जो राग विशेष का प्रतिनिधित्व करता है। वह स्वर संगति जिसका किसी राग में विशिष्ट स्थान हो तथा अन्य राग में भी उसी स्वर संगति का समावेश किया जाए तो वहां भी वह उस राग का अंग बनकर अपने उसी अंग या प्रकार के नाम से जानी जाती है। उस एक स्वर समूह को सुनकर सुधि श्रोताजन पहचान लेते है कि अमुक राग को गाया या बजाया जा रहा है। रागांग पद्धति में रागों का वर्गीकरण राग के प्रमुख अंग के आधार पर किया जाता है, जैसे– बिलावल अंग, तोड़ी अंग, कल्याण अंग, मल्हार अंग, कान्हड़ा अंग इत्यादि। रागांगो की प्रमुख विशेषता यह है कि रागों के स्वरों में समानता होने पर भी केवल भिन्न रागांगो के प्रयोग से उनमें भिन्नता पायी जाती है, उदाहरणार्थ 'मियाँ मल्हार' एवं 'बहार' दोनों रागों के स्वर समान है किन्तु 'मियाँ मल्हार' 'मल्हार' का रागांग होने से 'बहार' राग से अलग हो जाता है।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

रागांग : व्युत्पति, अर्थ एवं परिभाषा

रागांग शब्द की व्युत्पति दो शब्दों के मेल से हुई है, 'राग' + 'अंग'। स्वयं शब्द से ही स्पष्ट है की राग का अंग अर्थात 'रागांग'। रागांग यानि राग वाचक विशिष्ट स्वर समुदाय अथवा विशिष्ट स्वर संगति। दूसरे शब्दों में कहें तो ऐसी स्वर संगतियाँ जो राग का प्रतिनिधित्व करती हो, रागांग कहलाती हैं।

डॉ. सरोज घोष के मतानुसार,

"रागांग का अर्थ है – राग वाचक स्वर समुदाय। रागांग दो शब्दों के मेल से बना है, राग + अंग अर्थात् राग का जो अंग विशेष रूप से द्रष्टिगत हो वह रागांग है।" (१)

डॉ. प्रेमलता नाहर के अनुसार

"रागांग शब्द राग और अंग इन दो शब्दों से मिलकर बना है। अंग से अभिप्राय राग की मुख्य स्वरावली में प्रयुक्त होने वाली विशिष्ट स्वर संगति से है।" (२)

'अंग' अर्थात् राग का वह विशेष अवयव, जिसमें प्रयुक्त किये जाने वाले निश्चित स्वर समूह, उसमें निहित लय संचरण एवं सांगीतिक अलंकरणों – मींड, कण, गमक, आन्दोलन इत्यादि से राग का निखार विशिष्ट रूप से होता है। रागों का वर्गीकरण करते हुए महान संगीताचार्य पंडित विष्णुनारायण भातखंडे जी ने 'अंग' का अर्थ बताते हुए कहा है, "अंग अर्थात् ऐसा भाग जो रागों में अधिक स्पष्ट दिखाई देता है। किसी राग के आरोह में नियमित स्वर छोड़ना, किसी के आरोह या अवरोह विशेष प्रकार के रखना, किसी राग की स्वर रचना विशिष्ट प्रकार की रखना आदि।" (३)

'रागांग' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग मतंगकृत 'ब्रह्देशी' ग्रंथ में मिलता है। उन्होंने इस ग्रंथ के रागाध्याय में देशी रागों को वर्गीकृत करते हुए कहा है,–

"रागांगादिनि देशी रागा इति इत्युचयते।"

मतंग द्वारा दी गई रागांग की परिभाषा,

"ग्रामोक्तानां तु रागाणां छायामात्रं भवेदिति।

गीतज्ञैः कथिता सर्वे रागान्गास्तेन हेतुना।

अर्थात् : ग्राम रागों की छाया जिनमें दिखाई दे वे रागांग है।" (४)

पंडित श्री कृष्ण नारायण रातांजनकर जी के अनुसार रागांग की परिभाषा,

"रागांग यानि ऐसी एक विशेष स्वर संगति जो बहुत से रागों में मिलकर उनका अंग बन जाती है और जिसके जरिये यह सब राग एक ही प्रकार के समझे जाते हैं।" (५)

डॉ. कृष्णा बिष्ट ने "रागांग" की बहुत ही सुंदर ढंग से परिभाषित किया है,

Just as the idiom and not merely grammar makes a language, so also it is the Anga and not merely the scale of a Raga that is its distinguishing feature. (6)

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

अर्थात्: जैसे कोई भाषा केवल शब्दों का संग्रह नहीं होती, बल्कि व्याकरण द्वारा सही रूप भी धारण करती है तथा मुहावरों एवं लोकोक्तियों के द्वारा सौन्दर्य वर्धित होती है। ठीक वैसे ही राग केवल स्वरों का संग्रह नहीं है, अपितु उन स्वरों के नियमित व् समुचित प्रयोग के साथ–साथ विशिष्ट स्वर संगतियों एवं विशिष्ट चलन के द्वारा ही वह मौलिक रूप से राग को सौंदर्य प्रदान होता है। राग के विशिष्ट गुण और व्यक्तित्व दर्शन 'अंग' के माध्यम से होता है।

इसी तरह श्री जयसुखलाल त्रिभुवन शाह अपनी पुस्तक 'कान्हड़ा के प्रकार' में लिखते हैं–

"रागांग राग अर्थात जो स्वर संगति किसी राग में अपना विशिष्ट स्थान बना लेती है और अन्य किसी भी राग में समाविष्ट करने से उस राग का अंग बनकर उसी अंग या प्रकार के नाम से पहचानी जाती है, इस अंग वाले रागों को गुणीजन रागांग राग कहते है।" (७)

उपरोक्त सभी परिभाषाओं से स्पष्ट हो जाता है कि 'रागांग' राग का वह विशिष्ट स्वर समूह है, जो राग विशेष का प्रतिनिधित्व करता है। वह स्वर संगति जिसका किसी राग में विशिष्ट स्थान हो तथा अन्य राग में भी उसी स्वर संगति का समावेश किया जाए तो वहां भी वह उस राग का अंग बनकर अपने उसी अंग या प्रकार के नाम से जानी जाती है। उस एक स्वर समूह को सुनकर सुधि श्रोताजन पहचान लेते है कि अमुक राग को गाया या बजाया जा रहा है। जैसे– 'नि़ रे ग 'प रे' से कल्याण का सहज आभास, 'ग म रे सा' से भैरव, तथा 'रे ग रे सा' से तोड़ी का व्यक्तित्व स्वतः ही प्रकट हो जाता है। ये सभी राग विशेष के प्रमुख अंग हैं, जिन्हें 'रागांग' कहा जाता है। अब इन्हीं विशिष्ट स्वर समूहों की छवि जिन अन्य रागों में प्रयुक्त होगी, उन्हें अंग राग या रागांग राग कहा जाएगा। यथा– 'ग म रे सा' यह स्वर समुदाय भैरव अंग का सूचक है। यह स्वर समुदाय जिन–जिन रागों में प्रयुक्त होगा वे सभी भैरव अंग के राग माने जायेंगे, जैसे अहीर भैरव, रामकली, आनंद भैरव आदि। इसी प्रकार अंगो के आधार पर रागों को वर्गीकृत करने का एक विशिष्ट एवं नवीन पद्धति का उल्लेख कई विद्ववजनों ने किया है, जिसे आधुनिक काल में 'रागांग–राग वर्गीकरण' के नाम से जाना जाता है।

रागांग–राग वर्गीकरण पद्धति

राग वर्गीकरण अर्थात् "कुछ समान गुणों को ध्यान में रखते हुए जब रागों को विभिन्न वर्गों में विभाजित किया जाता है तब उसे राग–वर्गीकरण कहते हैं।" (८) राग वर्गीकरण की कई पद्धतियाँ प्राचीन से लेकर आधुनिक काल तक प्रचार में हैं। रागों के विकास के पश्चात् कई विद्वानों ने राग वर्गीकरण के महत्व को समझ कर अपने–अपने मतानुसार प्रचलित रागों का वर्गीकरण किया। राग वर्गीकरण को काल खंड की दृष्टि से विभाजित किया गया है, वह इस प्रकार है –

प्राचीन काल के अंतर्गत राग वर्गीकरण पद्धति

- ग्राम मूर्च्छना जाति वर्गीकरण
- रत्नाकर निर्मित जाति वर्गीकरण
- शुद्ध, छायालग, संकीर्ण वर्गीकरण

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

मध्य काल के अंतर्गत राग वर्गीकरण पद्धति

- राग–रागिनी वर्गीकरण
- मेल–राग वर्गीकरण

आधुनिक काल के अंतर्गत राग वर्गीकरण पद्धति

- थाट–राग वर्गीकरण
- रागांग–राग वर्गीकरण

भारतीय संगीत में 'रागांग' शब्द का प्रयोग राग–वर्गीकरण के संदर्भ में प्राचीन काल से ही किया गया है। आधुनिक काल के संदर्भ में अगर हम विचार करें तो राग की विशिष्ट स्वर संगतियाँ (अंग) तथा अंग–संचालन के आधार पर किया गया वर्गीकरण ही 'रागांग वर्गीकरण' के नाम से जाना जाता है।

रागों का वर्गीकरण करते हुए महान संगीताचार्य पंडित विष्णु नारायण भातखंडे जी ने रागांग को अधिक स्पष्ट रूप से व्याख्यायित किया है–

"'रागांग' स्वरों का ऐसा समुदाय होता है जो राग रूपी शरीर का मुख्य भाग (अंश) होता है तथा इन अंगो के आधार पर जो वर्गीकरण किया जाता है उसे 'रागांग–वर्गीकरण' कहते है।" (९)

श्री श्याम दड़पे ने "संगीत कला विहार" में पंडित नारायण मोरेश्वर खरे जी का उल्लेख करते हुए कहा है–

"रागांग प्रणाली के प्रवर्तक होने का श्रेय स्व. नारायण मोरेश्वर खरे जी को दिया जाता है जो स्व. पंडित विष्णु दिगम्बर पलुस्कर जी के जयेष्ठ शिष्य थे।" (१०)

डॉ. मधुसुदन पटवर्धन ने "संगीत कला विहार" में पंडित नारायण मोरेश्वर खरे जी के रागांग पद्धति के बारे में कहा है–

"भारतीय संगीत शास्त्र में उनका बड़ा अधिकार था उन्होंने पंडित विष्णु नारायण भातखंडे जी तथा पंडित व्यंकटमुखी जी के मेल (थाट) पद्धतियों का गहराई के साथ अध्ययन किया था। इस बात का उल्लेख पंडित नारायण मोरेश्वर खरे जी के शास्त्रीय संदर्भ ग्रंथों में समय–समय अनुसार पाया जाता है। थाट पद्धति की कुछ मर्यादा ध्यान में आने के बाद पंडित नारायण मोरेश्वर खरे जी ने राग–वर्गीकरण करने हेतु एक अलग प्रणाली का सृजन किया। जिसका नाम है "रागांग प्रणाली"। "(११)

पंडित नारायण मोरेश्वर खरे जी के कथनानुसार, "बहुत सी स्वर रचनायें स्वतंत्र होती है, जिनमें विशेष प्रकार के भाव अथवा रस का आविर्भाव होता है। ऐसी रचनाओं में आरोह–अवरोह, वादी–संवादी आदि में ह्स्वत्व, दीर्घत्व तथा अल्पत्व और बहुत्व का नियम अच्छी तरह पाला जाता है। ऐसी स्वर रचनाओं में पूर्वांग के स्वर उत्तरांग के स्वरों के साथ पूर्णतया संबंध रखते हैं। ऐसी स्वर रचना वाले रागों को स्वयं राग कहना चाहिए और इन स्वतंत्र रागों की छाया जिन रागों में हो उन्हें रागांग कहना चाहिए।" (१२)

इस आधार पर किया गया राग वर्गीकरण "रागांग–राग" वर्गीकरण कहलाता है।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

रागों में परस्पर साम्य के दो प्रमुख तत्व है (१) स्वर–साम्य तथा (२) स्वरूप–साम्य। वर्तमान समय में प्रचलित थाट–राग वर्गीकरण स्थूल रूप से स्वर–साम्य पर आधारित होते हुए भी कहीं कहीं पर स्वरूप–साम्य भी दृष्टिगोचर होता है। जबकि रागांग–वर्गीकरण पूर्णतया राग के स्वरूप–साम्य पर निर्भर है।

स्व. पंडित नारायण मोरेश्वर खरे जी ने स्वर–साम्य की अपेक्षा स्वरूप–साम्य को अधिक महत्व दिया और उन्होंने २६ अंग राग बताये हैं जो इस प्रकार हैं–

१) भैरव	२) बिलावल	३) कल्याण
४) खमाज	५) काफी	६) पूर्वी
७) मारवा	८) तोड़ी	९) भैरवी
१०) आसावरी	११) सारंग	१२) धनाश्री
१३) ललित	१४) पीलू	१५) सोरठ
१६) विभास	१७) नट	१८) श्री
१९) बागेश्वरी	२०) केदार	२१) शंकरा
२२) कान्हड़ा	२३) मल्हार	२४) हिंडोल
२५) भूपाली	२६) आसा	

रागांग पद्धति में रागों का वर्गीकरण राग के प्रमुख अंग के आधार पर किया जाता है, जैसे– बिलावल अंग, तोड़ी अंग, कल्याण अंग, मल्हार अंग, कान्हड़ा अंग इत्यादि। रागांगो की प्रमुख विशेषता यह है कि रागों के स्वरों में समानता होने पर भी केवल भिन्न रागांगो के प्रयोग से उनमें भिन्नता पायी जाती है, उदाहरणार्थ 'मियाँ मल्हार' एवं 'बहार' दोनों रागों के स्वर समान है किन्तु 'मियाँ मल्हार' 'मल्हार' का रागांग होने से 'बहार' राग से अलग हो जाता है। भारतीय संगीत में 'रागांग पद्धति' आज के दौर में भी अपना विशिष्ट स्थान रखती है।

निष्कर्ष

उपरोक्त चर्चाओं से इस निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है कि रागांग पद्धति आधुनिक काल में भी अपना महत्वपूर्ण स्थान कायम रखे हुए है। थाट पद्धति आज प्रचार में है, किन्तु इसे व्यापक बनाने के लिए भी रागांग पद्धति का आधार ही लिया जाता है। आज पूरे संगीत जगत में इस पद्धति को शास्त्र एवं क्रियात्मक रूप में एकमत होकर स्वीकारा गया है।

संदर्भ

१) घोष, सरोज. (वर्ष). कानडा का उद्‌भव और विकास. राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, पृ. ३७
२) नाहर, प्रेमलता. (2002). हिन्दुस्तानी संगीत में सारंग, मल्हार और कान्हड़ा. कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्युटर्स, नई दिल्ली, पृ.१
३) भातखंडे, विष्णुनारायण. (). भातखंडे संगीत शास्त्र (भाग – 4). संगीत कार्यालय हाथरस (उ. प्र.) पृ. २६
४) जैन, रेणु. (2006). स्वर और राग. कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्युटर्स, नई दिल्ली, पृ. १६६

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
ISSN 2320–7175 | Volume 09, Issue 01, June 2021
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021
UGC CARE listed Journal

५) रातांजनकर. (दिसम्बर 1955 १९५५). लक्ष्य संगीत (संगीत पत्रिका). श्री चिदानंद डी नागरकर, लक्ष्य संगीत कार्यालय, मुंबई, पृ. २६
६) नाहर, प्रेमलता. (2002). हिन्दुस्तानी संगीत में सारंग, मल्हार और कान्हड़ा. कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली, पृ.१
७) शाह, जयसुखलाल. त्रिभुवनदास. कान्हड़ा के प्रकार. शाह परिवार, शिवनेरी शिवाजी पार्क, नई दिल्ली, पृ. १
८) पाठक, सुनंदा. (2016). हिन्दुस्तानी संगीत में राग की उत्त्पत्ति एवं विकास. चतुर्थ अध्याय, राग वर्गीकरण, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, पृ. १९४
९) कालड़ा, शशि. प्रचलित संप्राकृतिक रागों का तुलनात्मक अध्ययन. संजय प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. २६
१०) दडपे, श्याम. (2006). राग वर्गीकरण की रागांग प्रणाली. 'संगीत कलाविहार', अगस्त २००६, वर्ष ५९, अंक – ८, अखिल भारतीय गंधर्व महाविद्यालय मंडल प्रकाशन, पृ. २०
११) पटवर्धन, मधुसुदन. (2001). रागांग पद्धति. संगीत कलाविहार, जुलाई २००१, वर्ष दृ ५५, अंक दृ ७, अखिल भारतीय गंधर्व महाविध्यालय मंडल प्रकाशन, पृ. १५
१२) पटवर्धन, विनायकराव. (1958). राग विज्ञान. (भाग दृ ६), श्री मधुसुदन विनायक पटवर्धन संगीत गौरव ग्रंथमाला, पुणे, प्रथम संस्करण १९५८, पृ. ९९